साप्ताहिक
डाक पंजीयनः म.प्र./भोपाल/4-479/2019-21
RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

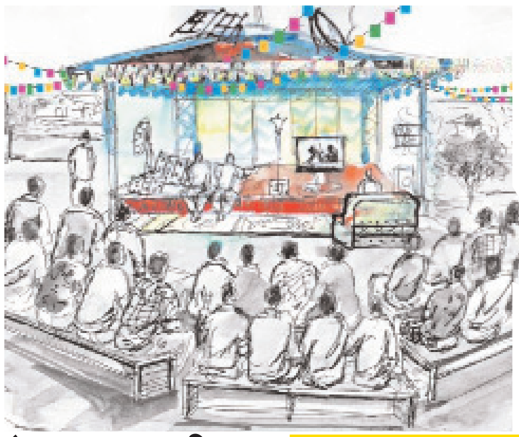

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 17-23 जनवरी 2022, अंक-42
भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित
पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

मध्य प्रदेश में किसानों को मुआवजा मिलेगा 90 करोड़ रुपए

ओलावृष्टि से 900 करोड़ रुपए की फसल बर्बाद!

राज्य सरकार 25 करोड़ रु. तात्कालिक राहत राशि जल्द बांटेगी

भोपाल। संवाददाता

प्रदेश में ओलावृष्टि से अब तक 1,04, 611 हेक्टेयर क्षेत्र में रबी फसलों को नुकसान पहुंचने का अनुमान है। किसानों को राहत देने के लिए सभी जिलों में सर्वे कराया जा रहा है। इसके आधार पर आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। अधिकांश जिलों में 25 से 33 प्रतिशत के बीच नुकसान आकलन किया गया है। सर्वे का काम समय पर हुआ तो राज्य सरकार किसानों को अगले 10 से 15 दिन में 25 करोड़ रुपए तात्कालिक सहायता राशि बांट सकती है। हालांकि नुकसान के मुकाबले यह मुआवजा बहुत कम होता है। राजस्व परिपत्र पुस्तक के प्रावधान अनुसार दो हेक्टेयर भूमि में 25 से 33 प्रतिशत के बीच नुकसान होने पर प्रति हेक्टेयर न्यूनतम पांच हजार रुपए का मुआवजा मिलेगा, जो वर्षा आधारित फसल के लिए अधिकतम 16 हजार हो सकता है। कुछ फसलों में 50 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान पर यह राशि 30 हजार रुपए तक हो सकती है। कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक औसत नौ हजार रुपए मुआवजा किसानों को मिलता है तो यह 90 करोड़ रुपए के आसपास ही होगा। जबकि, प्रारंभिक अनुमान के मुताबिक किसानों की 900 करोड़ से ज्यादा की फसल के नुकसान की आशंका है। फसल बीमा से राहत बाद में मिलेगी। इसके लिए राजस्व विभाग द्वारा क्षति का आकलन करने के बाद कृषि विभाग को प्रतिवेदन दिया जाएगा, जिसके आधार पर क्लेम बनेगा। राज्य सरकार ने 25 प्रतिशत तात्कालिक सहायता देने के लिए सात दिन में सर्वे पूरा करने का निर्देश दिया है।

हरदा में सर्वाधिक नुकसान

प्रदेश में ओलावृष्टि से सर्वाधिक नुकसान हरदा में हुआ है। यहां 30 हजार हेक्टेयर से ज्यादा क्षेत्र में फसल को 40 से 80 प्रतिशत तक नुकसान हुआ है।

-प्रभावित किसानों की बेटियों का ब्याह कराएगी सरकार -पेज-8 पर

जिला	क्षति फीसदी
भिंड	50
अशोकनगर	50
गुना	50
बैतूल	20
झाबुआ	33
राजगढ़	50
विदिशा	50
श्योपुर	20

ओलावृष्टि से फसल को नुकसान की स्थिति

जिला	गांवों की सख्या	रकबा हेक्टेयर में
राजगढ़	85	5,400
विदिशा	62	4,200
मुरैना	17	155
श्योपुर	20	250
भिंड	20	1,000
ग्वालियर	76	8,000
अशोकनगर	80	15,390
शिवपुरी	97	17,403
दतिया	56	सर्वे जारी
गुना	274	20,000
धार	23	270
झाबुआ	33	86
छिंदवाड़ा	54	1,547
सिवनी	28	सर्वे जारी
बैतूल	14	300
हरदा	21	30,610
होशंगाबाद	32	सर्वे जारी

जिन किसानों का 50 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान हुआ है, उन किसानों को 30 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर राहत राशि दिलाई जाएगी। फसल बीमा में फसलों को नुकसान हुआ है उसमें 25 प्रतिशत एडवांस राशि तथा शेष 75 प्रतिशत राशि फसल आकलन के उपरांत दिलाई जाएगी। राहत व बीमा राशि का शीघ्र भुगतान करवाया जाएगा।
शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

किसानों के नुकसान की भरपाई राज्य सरकार करेगी। आरबीसी के नियमों के तहत आर्थिक सहायता देने के साथ ही प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से भी 25 प्रतिशत राशि किसानों को जल्द दिलाने के प्रयास सरकार कर रही है। किसान घबराएं नहीं। सर्वे की पारदर्शिता के लिए वीडियोग्राफी भी कराई जा रही है।
कमल पटेल, कृषि मंत्री

श्योपुर के 300 किसानों का रोका दिया भुगतान

» समर्थन पर खरीदा बाजरा, अब कह रहे-इसे वापस ले जाओ

श्योपुर। जिले के प्रमुख बाजरा उत्पादक क्षेत्र विजयपुर में कई किसानों के सामने अजीब संकट खड़ा हो गया है। किसानों ने समर्थन मूल्य पर बाजरा बेचा था और वे भुगतान का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन अब उन्हें बेचा गया बाजरा वापस लेना पड़ेगा। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने क्वालिटी खराब बताकर यह बाजरा जमा हीनहीं किया है। इस संबंध में प्रदेश के मुख्य सचिव ने जांच में फेल बाजरा किसानों को लौटाने के आदेश दिए हैं। अब खरीदी संस्था की ओर से किसानों को बाजरा ले जाने की सूचना फोन पर दी जाएगी। सेवा सहकारी संस्था सहसराम द्वारा अंतिम तारीख 30 दिसंबर तक कुल 10285 क्विंटल बाजरा खरीदा गया। यह बाजरा क्षेत्र के 400 के किसानों ने बेचा। इसमें से केवल 3284 क्विंटल किसानों को

अटका दिया भुगतान

बाजरा एफसीआई ने वेयर हाउस पर जमा किया है। बाकी 7001 क्विंटल बाजरा मानक स्तर का नहीं माना है। सरकार द्वारा तय समर्थन मूल्य 2250 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से यह बाजरा खरीदा गया था। 3284 क्विंटल बाजरे का उठाव होने पर संबंधित करीब 100 किसानों को कुल 2 करोड़ 31 लाख 41 हजार 450 रुपए का भुगतान कर दिया गया, लेकिन 7001 क्विंटल बाजरा फेल होने के कारण 300 किसानों के 4 करोड़ 57 लाख 52 हजार 250 रुपए का भुगतान अटक गया।

खुले में रखा बाजरा

एफसीआई द्वारा लौटाया गया किसानों का 7001 क्विंटल बाजरा वर्तमान में सहसराम में संस्था के टीनशेड व खुले मैदान में रखा हुआ है। इसमें खुले में रखा बाजरा पिछले सप्ताह हुई बारिश में भीग चुका है। भीगा हुआ बाजरा सड़ने की आशंका है। ऐसे में किसानों को मंडी में किसानों को औने-पोने दाम पर बेचना पड़ सकता है।

समर्थन मूल्य पर खरीदा गया 7001 क्विंटल बाजरा क्वालिटी खराब होने से रिजेक्ट हो गया है। एफसीआई ने सिर्फ 3284 क्विंटल बाजरा ही जमा किया है। अब हमें खराब बाजरा किसान को वापस देने का आदेश मिला है।
मुन्नालाल धाकड़, प्रबंधक, सेवा सहकारी संस्था सहसराम

धान खरीद: अब तक 64 लाख किसानों से हो चुकी खरीद

पांचवें नंबर पर एमपी और पहले पायदान पर पंजाब

» सरकार ने जारी किए टॉप पांच राज्यों के सरकारी आंकड़े

» छत्तीसगढ़ दूसरे, तेलंगाना तीसरे व यूपी चौथे स्थान पर

भोपाल। विशेष संवाददाता

धान उगाने वाले राज्यों में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अब तक 64.07 लाख किसानों से 532.86 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद हुई है, जिसके बदले किसानों को 1,04,441.45 करोड़ रुपए मिले हैं।

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक धान खरीद में पहले पायदान पर पंजाब, दूसरे पर छत्तीसगढ़, तीसरे पर तेलंगाना और चौथे पर उत्तर प्रदेश और पांचवें नंबर पर मप्र है। उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार खरीफ विपणन सीजन 2021-22 में धान की खरीद सुचारू रूप से जारी है। रिपोर्ट के मुताबिक 9 जनवरी तक तक 532.86 लाख मीट्रिक टन से ज्यादा की खरीद हो चुकी है। देश में सबसे ज्यादा धान की खरीद पंजाब से हुई है। पंजाब में 924299 किसानों से 36623.64 करोड़ रुपए की एमएसपी का 18685532 मीट्रिक टन धान खरीदा गया है। दूसरे नंबर पर छग है जहां, 1690459 किसानों से 13261.33 करोड़ का 6765986 धान खरीदा गया है। तीसरे नंबर पर तेलंगाना है, जहां, 967134 किसानों से 12847.29 करोड़ के 6554739 मीट्रिक टन धान की सरकारी खरीद हुई है। चौथे नंबर पर यूपी है, जहां के 656162 किसानों से 9114.57 करोड़ रुपए के 4650290 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई है। पांचवें नंबर पर मध्य प्रदेश है जहां, 467771 किसानों से 6242.26 करोड़ रुपए के 3184827 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई है।

धान खरीद में टॉप 5 राज्य

राज्य	किसान	एमएसपी करोड़	खरीद मीट्रिक टन
पंजाब	924299	36623.64	18685532
छत्तीसगढ़	1690459	13261.33	6765986
तेलंगाना	967134	12847.29	6554739
उत्तर प्रदेश	656162	9114.57	4650290
मध्य प्रदेश	467771	6242.26	3184827

अभी चल रही खरीदी

राज्यों में हुई और हो रही है धान खरीद खरीफ विपणन सत्र 2021-22 में पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, गुजरात, असम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, तेलंगाना, राजस्थान, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में धान की खरीद जारी है।

यूपी में फरवरी तक खरीदी

एमएसपी पर धान खरीद में यूपी का हाल उत्तर प्रदेश के चुनावों में इस बार किसानों का मुद्दा चर्चा में है। धान खरीद की बात करें तो प्रदेश में 1390894 किसानों ने धान बेचने के लिए ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 13 फरवरी तक पौने आठ लाख (774118) किसानों से 49.66 मीट्रिक टन धान की खरीद हो चुकी है। यूपी में धान की खरीद 28 फरवरी तक जारी रहेगी। प्रदेश में धान खरीद को लेकर कई जगह किसानों की नाराजगी भी सामने आई है। पिछले दिनों ही प्रदेश के मिर्जापुर में किसानों ने कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया था।

देश में 43.38 लाख किसान कर रहे हैं ऑर्गेनिक खेती

आर्गेनिक खेती में नंबर-1 मध्यप्रदेश

संवाददाता। खंडवा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्राकृतिक खेती अपनाने का आह्वान के बाद प्रदेश में ऑर्गेनिक खेती पर विशेष जोर दिया जा रहा है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी इस दिशा में विशेष प्रयास कर रहे हैं। आज अगर जैविक खेती का जिक्र होता है तो मध्य प्रदेश का नाम देश में सबसे पहले लिया जाता है। इस समय देश में 43,38,495 किसान ऑर्गेनिक खेती कर रहे हैं, जिसमें से अकेले 7,73,902 मध्य प्रदेश के हैं। अन्य राज्य बहुत पीछे हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने 2001-2002 में जैविक खेती पर काम शुरू कर दिया था। साल 2018-19 से 2020-21 तक यहां पारंपरिक कृषि विकास योजना के तहत 1,22,400 किसानों को जैविक खेती के लिए ट्रेनिंग दी गई है। जैविक कृषि उत्पादों के एक्सपोर्ट में भी इसीलिए एमपी की अहम योगदान है।

-प्रदेश में 17.31 लाख हैक्टेयर में जैविक खेती हो रही

प्रदेश के उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री भारत सिंह कुशवाह का कहना है कि किसानों के सहयोग से सूबे को आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। विभाग किसानों को आधुनिक तरीके से जैविक कृषि के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। विभागीय नसर्जरियों में किसानों को जैविक कृषि की ट्रेनिंग दी जा रही है। कुशवाह ने गत दिनों खंडवा जिले के रीछी उद्यान क्षेत्र में भ्रमण के दौरान यह बात कही। इस समय प्रदेश में 17.31 लाख हैक्टेयर में जैविक खेती हो रही है।

जैविक फसलों का निरीक्षण किया

कुशवाह ने खंडवा में रीछी उद्यान में जैविक तरीकों से उत्पादित की जा रही फसलों का निरीक्षण किया। उन्होंने उद्यान विभाग के अधिकारियों से कहा कि वे किसानों को अधिक से अधिक जैविक खेती करने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने जैविक खाद के निर्माण की प्रक्रियाओं के संबंध में भी अधिकारियों से चर्चा की। अधिकारियों ने बताया कि ड्रिप एरिगेशन से पानी की बचत होती है एवं मल्चिंग विधि से फसलों को खरपतवार से दूर रखा जा सकता है।

सिंचाई परियोजना का लिया जायजा

कुशवाह ने खंडवा में ही काली सिंध माइक्रो सिंचाई परियोजना के फेस-1 और फेस-2 के काम की प्रगति का जायजा भी लिया। निरीक्षण के दौरान पम्प हाउस, कैनाल निर्माण एवं पाइप लाइन कार्यों के संबंध में अधिकारियों से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने अधिकारियों को कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान रखने और सभी कार्यों को तय समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए।

कैसे और बढ़ेगी केमिकल फ्री खेती

कुशवाह का कहना है कि प्रदेश के फल और सब्जी उत्पादक किसानों को जैविक उत्पाद पैदा करने की लिए प्रेरित किया जाएगा। ऐसी खेती करने वाले किसानों का सर्वे कर जिला वार संख्या एकत्र की जाएगी। ऐसे किसान जो जैविक सब्जी और फलों के उत्पादन से जुड़े हैं, उनको मदद भी दी जाएगी। जैविक खाद के लिए गौशालाओं से निकलने वाले गोबर के जैविक खाद को सीधे किसानों तक पहुंचाने की योजना बनाई गई है। ऑर्गेनिक खेती करने वाली नर्सरियों को गौशालाओं से जोड़ने के बाद किसानों और गौशालाओं दोनों को लाभ होगा।

योजना में 80 हजार लोगों दिया काम का ऑफर

मजदूरों का खेती-किसानी में बढ़ा रुझान, ठुकराया मनरेगा का काम

होशंगाबाद। खेती किसानी में इन दिनों मजदूर व्यस्त हैं। जिसकी वजह से जिले में मनरेगा से होने वाले कामकाज प्रभावित हो रहे हैं। मनरेगा के तहत जिले के पंजीकृत एक लाख 83 हजार मजदूरों में से 79 हजार 936 को मजदूरी का ऑफर

दिया गया था। जिसमें से सिर्फ 46 हजार 871 लोगों ने ही मनरेगा में काम किया। गौरतलब है कि गेहूं फसल की बोवनी और खेतों में कामकाज के लिए बड़ी संख्या में मजदूर काम पर लगे हुए हैं। इसके अलावा मनरेगा के मुकाबले खेतों में काम करने के एवज में मजदूरों को अधिक मजदूरी मिलती है। यही वजह है मनरेगा की बजाए किसान खेतों में काम करने जा रहे हैं। मनरेगा के जिला समन्वयक अभिषेक तिवारी ने बताया कि इन दिनों मनरेगा में मजदूरों की संख्या पिछले महीनों की अपेक्षा घटी है। खेती किसानी में काम मिलने की वजह से मजदूर घट गए हैं।

ब्लॉक	पंजीकृत मजदूर	रोजगार की पेशकश	रोजगार प्रदान
बाबई	29765	10865	5345
बनखेड़ी	32785	13259	8207
होशंगाबाद	12200	4611	3012
केसला	26792	13379	7827
पिपरिया	31435	14489	7653
सिवनी मालवा	24382	13543	7610
सोहागपुर	25648	9795	7217

सीएम बोले- खेती को लाभ का धंधा बनाना है, 600 करोड़ के निवेश से बनेगा प्लांट

मोहिनी डी वर्मा, धार। मध्यप्रदेश कृषि प्रधान राज्य है। इसलिए हमारी चिंता यह है कि हम फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए कैसे किसानों को सुविधा दें। इसे लेकर हम काम कर रहे हैं। खेती को लाभ का धंधा बनाने की दिशा में सरकार काम कर रही है। इसे लेकर सिंचाई का रकबा भी बढ़ाया जा रहा है। बदनावर सोयाबीन उत्पादन का प्रमुख केंद्र है। सिंचाई के क्षेत्र में किसानों की सुविधा के लिए हम काम कर रहे हैं। ये बातें मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने रविवार को खेरवास में लगने वाले सोया प्लांट के भुमिपूजन अवसर पर भोपाल से वर्चुअल जुड़कर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश में अप्रैल से लेकर दिसंबर तक 27,856 करोड़ रुपए का निवेश आया है। यह लगातार जारी है। प्रदेश सरकार के औद्योगिक नीति और निवेश प्रोत्साहन मंत्री राजवर्धन सिंह ने कार्यक्रम में कहा की बदनावर में सोया प्लांट लगने के बाद युवाओं को रोजगार मिलेगा। आईबी ग्रुप के बहादुर अली ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि इस उद्योग की स्थापना दत्तीगांव के प्रयास से ही महाराष्ट्र की बजाय यहां यह उद्योग स्थापित होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में ग्रुप 600 करोड़ से ज्यादा का निवेश करेगा।

-शिफ्ट होने वाले प्रत्येक परिवार को मिलेगा 15 लाख मुआवजा

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से हटाए जाएंगे तीन गांव

संवाददाता, भोपाल।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व होशंगाबाद से तीन गांव मल्लूपुरा, खामदा, झालई सहित सुपलई के दो सौ परिवारों को विस्थापित किया जाएगा। केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने गांवों के विस्थापन की अनुमति दे दी है। इन गांवों में एक हजार से ज्यादा परिवार निवास करते हैं। इन परिवारों के लिए बैतूल, होशंगाबाद और नरसिंहपुर जिलों में भूमि तलाश की जा रही है। बाघों के संरक्षण और सुरक्षा के मद्देनजर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से इसी साल चार गांव के बाशिंदों को दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया जाएगा। इनमें से एक गांव सुपलई की आधा से ज्यादा आबादी को पहले शिफ्ट किया जा चुका है। इस गांव में अब दो सौ परिवार हैं, जिन्हें अन्य तीन गांवों के ग्रामीणों के साथ दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया जाएगा। इन गांवों के

बाशिंदों ने बैतूल, नरसिंहपुर, होशंगाबाद सहित छिंदवाड़ा में शिफ्ट होने की इच्छा जाहिर की है। ग्रामीणों की मांग के अनुसार वन विभाग प्रबंध करने में जुट गया है। गौरतलब है कि प्रदेश में 926 वनग्राम थे। इनमें से 101 गांव शिफ्ट किए जा चुके हैं। वर्तमान में विभिन्न संरक्षित क्षेत्र (टाइगर रिजर्व, नेशनल पार्क, अभयारण्य) में 825 वनग्राम हैं।

अब मिलेंगे 15 लाख

वन ग्रामों को छोड़कर दूसरी जगह बसने वाले परिवारों को सरकार अब 15 लाख रुपए प्रति इकाई देगी। हाल ही में राज्य सरकार ने यह राशि बढ़ाई है। इससे पहले 10 लाख प्रति परिवार दिया जा रहा था। इकाई में वह परिवार आता है, जिसमें पति-पत्नी और 18 साल से कम उम्र के बच्चे होते हैं। 18 साल या उससे अधिक उम्र वालों को अलग इकाई माना जाता है।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से तीन गांवों को शिफ्ट करने की अनुमति मिल गई है। जमीन मिलते ही शिफ्टिंग भी शुरू कर दी जाएगी।
सुनील अग्रवाल, प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, भू-प्रबंध

-पिछले साल 131.06 लाख हेक्टेयर में बोवनी कर ली गई थी

प्रदेश में रबी का लक्ष्य पूरा, 138.77 लाख हेक्टेयर में बोवनी

संवाददाता, भोपाल।

प्रदेश में अब तक 138.77 लाख हेक्टेयर में बोनी हो गई है जो लक्ष्य की तुलना में 99.9 फीसदी है। गत वर्ष इस अवधि में 131.06 लाख हेक्टेयर में बोनी कर ली गई थी। इस वर्ष राज्य में गेहूं का रकबा कम कर दलहनी एवं तिलहनी फसलों का रकबा बढ़ाने पर जोर दिया गया था जिस कारण परिणाम भी सकारात्मक मिलने की उम्मीद है, क्योंकि दलहनी एवं तिलहनी फसलें लक्ष्य के विरुद्ध क्रमश: 104.6 एवं 130.4 प्रतिशत अधिक रकबे में बोयी गई है। अब तक गेहूं की बोनी 90.76 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जबकि गत वर्ष इस अवधि में 93.65 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। इस प्रकार गेहूं की बोनी में लक्ष्य के विरुद्ध लगभग 4 लाख हेक्टेयर की कमी बनी हुई है।

गत वर्ष 135.33 लाख हेक्टेयर में बोनी की गई थी

कृषि विभाग के मुताबिक प्रदेश में रबी फसलों का सामान्य क्षेत्र 107 लाख 33 हजार हेक्टेयर है। गत वर्ष 135.33 लाख हेक्टेयर में बोनी की गई थी जबकि इस वर्ष 138.89 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें लेने का लक्ष्य रखा गया है। राज्य में प्रमुख फसल चने की बोनी अब तक 24.94 लाख हेक्टेयर में हो गई है जो गत वर्ष समान अवधि में 21.60 लाख हे. में हुई थी। अन्य फसलों में अब तक मटर 2.45 लाख हे. में, मसूर 6.19 लाख हे. में बोई गई है।

सरसों की बोवनी 3 लाख हेक्टेयर ज्यादा

राज्य की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बोनी लक्ष्य 8.63 लाख हे. के विरुद्ध 11.61 लाख हे. में हो गई है। गत वर्ष इस समय तक 7.81 लाख हे. में बोनी हुई थी। वहीं अलसी की बोनी 1 लाख हेक्टेयर में हुई है। इस वर्ष गन्ना 1.44 लाख हेक्टेयर लक्ष्य के विरुद्ध अब तक 82 हजार हेक्टेयर में बोया गया है। प्रदेश में अब तक कुल अनाज फसलें 91.75 लाख हेक्टेयर में, दलहनी फसलें 33.58 लाख हे. में एवं तिलहनी फसलें 12.61 लाख हेक्टेयर में बोई गई हैं।

प्रदेश में रबी फसलों की बोवनी

7 जनवरी 2022 तक (लाख हे. में)

फसल	लक्ष्य	बोवनी
गेहूं	94.82	90.76
जौ	0.86	0.99
चना	24.31	24.94
मटर	2.33	2.45
मसूर	5.48	6.19
सरसों	8.63	11.61
अलसी	1.04	01
गन्ना	1.44	0.82

-गेहूं के रकबे में 6 लाख हेक्टेयर कमी

देश में बढ़ा तिलहनी फसलों का रकबा

संवाददाता, नई दिल्ली।

देश की प्रमुख रबी फसल गेहूं के रकबे में लगभग 6 लाख हेक्टेयर की कमी बनी हुई है। अब तक 333 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई है जबकि गत वषर् इस अवधि में 339 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। वहीं दलहनी फसलों तथा मोटे अनाजों का रकबा भी कम है जबकि तिलहनी फसलों के रकबे में बढ़ोत्तरी हुई है। सरसों के क्षेत्र में सबसे अधिक वृद्धि हुई है। कुल रबी बुवाई भी सामान्य क्षेत्र को पार कर गई है परन्तु गत वषर् की तुलना में लगभग 10 लाख हेक्टेयर की कमी बनी हुई है। इस समय तक 635.73 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 646.29 लाख हेक्टेयर रकबा कवर किया गया था।

अब तक गेहूं की बोवनी का रकबा 333.97 लाख हेक्टेयर

कृषि मंत्रालय भारत सरकार के मुताबिक रबी की प्रमुख फसल गेहूं अब तक 333.97 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है। जबकि लक्ष्य 303.6 लाख हे. रखा गया है। गत वर्ष इस अवधि में 339.81 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। इस प्रकार लगभग 6 लाख हेक्टेयर कम क्षेत्र में गेहूं की बुवाई हुई है।

मोटे अनाजों की बुवाई 46.68 लाख हेक्टेयर में

वहीं मोटे अनाजों की बुवाई 46.68 लाख हेक्टेयर में कर ली गई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में मोटे अनाज 48.32 लाख हेक्टेयर में बोये गए थे इसमें अब तक ज्वार 23.48, मक्का 15.94 एवं जौ 6.71 लाख हे. में बोया गया है।

दलहनी फसलों की बोवनी अब तक 156.23 लाख हेक्टेयर में

देश में दलहनी फसलों की बोवनी अब तक 156.23 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि गत वर्ष 157.75 लाख हेक्टेयर में दलहनी फसलें बोयी गई थी। इसमें चने की बुवाई 109.44 लाख हे. में हो गई है। जबकि गत वर्ष अब तक 107.17 लाख हेक्टेयर में चने की बोनी की गई थी। चने का सामान्य क्षेत्र 95.66 लाख हे. है। इसी प्रकार मटर की बोनी 9.74 लाख हेक्टेयर में एवं मसूर 17.13, कुल्थी 3.40, उड़द की बोनी 6.34 लाख हेक्टेयर में हुई है।

16.92 लाख हेक्टेयर अधिक हुई सरसों की बुआई

देश की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बोवनी गत वर्ष की तुलना में लगभग 16.92 लाख हेक्टेयर अधिक है। अभी तक 89.71 लाख हे. में सरसों की बोवनी हो गई है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में 72.79 लाख हेक्टेयर में सरसों बोई गई थी।

गत वर्ष की तुलना में लगभग 17.19 लाख हेक्टेयर अधिक

देश में तिलहनी फसलों का रकबा तेजी से बढ़ा है अब तक 98.85 लाख हेक्टेयर में तिलहनी फसलें बोयी जा चुकी हैं जो गत वर्ष की तुलना में लगभग 17.19 लाख हेक्टेयर अधिक है क्योंकि गत वर्ष अब तक 81.66 लाख हेक्टेयर में तिलहनी फसलें बोयी गई थीं। इस प्रकार तिलहनी फसलें 21 फीसदी अधिक क्षेत्र में बोई जा चुकी हैं।

-कृषि क्षेत्र में सरकार के पास सीमित विकल्प

बजट में मांग आधारित खेती के लिए नई योजना का होगा प्रावधान

संवाददाता, नई दिल्ली।

कृषि क्षेत्र में सुधार का रास्ता फिलहाल बंद हो चुका है। निजी निवेश का रास्ता खोलने का प्रयास अवरुद्ध हो चुका है। यानी सरकारी खजाने पर निर्भरता और बढ़ेगी। दूसरी ओर कृषि, फर्टिलाइजर व खाद्य सब्सिडी का बढ़ता बोझ आम बजट की सेहत को बिगाड़ सकता है। हालांकि किसानों की दशा और दिशा पर इसका असर नहीं होने दिया जाएगा। यानी वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण किसानों की हर राह आसान करने की दिशा में और कदम बढ़ाती दिख सकती हैं।

थोड़ा बदल सकता है राहतों का तरीका

तरीका थोड़ा बदल सकता है। सब्सिडी का रूप भी बदल सकता है और परंपरागत खेती की जगह मांग आधारित कृषि को प्रोत्साहित करने के लिए विविधीकरण की नई स्कीम लाई जा सकती है। फसलों का उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने वाली राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के साथ दलहन व तिलहन की खेती के लिए चलाए जा रहे मिशन को आगे बढ़ाया जाएगा।

सब्सिडी को पूरी तरह खत्म करना आसान नहीं

कृषि और खाद्य क्षेत्र में दी जा रही सब्सिडी को खत्म करना सरकार के लिए बिल्कुल आसान नहीं है, लेकिन वर्ष 2023 में डब्लूटीओ के प्रविधानों के तहत सब्सिडी के तौर-तरीके बदलने होंगे। माना जा रहा है कि इससे कृषि मंत्रालय के अन्य प्रमुख मदों के बजट में कटौती हो सकती है। राजनीतिक वजह से पीएम-किसान निधि पर खर्च होने वाले 80 हजार करोड़ रुपए का प्रविधान आम बजट में करना ही होगा।

सरकारी खरीद पर भी देना होगा ध्यान

साथ ही एमएसपी पर हो रही सरकारी खरीद के लिए करीब पौने दो लाख करोड़ रुपए का बजट प्रविधान भी करना होगा। इसी तरह कुल 6.2 करोड़ टन अनाज राशन प्रणाली के तहत अति रियायती दरों पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत ढाई लाख करोड़ से अधिक की सब्सिडी का बंदोबस्त करना होगा।

कृषि सेक्टर की रफ्तार में इससे जुड़े अन्य क्षेत्रों की महती भूमिका

कृषि सेक्टर में परंपरागत खेती की विकास दर किसी भी हाल में एक से डेढ़ प्रतिशत से आगे नहीं खिसक पा रही है। उसे रफ्तार पकड़ाने में खेती से संबद्ध अन्य क्षेत्रों की अहम भूमिका है। इसमें पशुधन विकास, डेयरी, पोल्ट्री, मत्स्य और बागवानी जैसे जैसे क्षेत्र ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। इससे जहां लोगों को रोजी रोजगार के साधन मुहैया हुए तो किसानों की आमदनी बढ़ाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आधुनिक तकनीक के भरोसे ही बढ़ाया जा सकता है उत्पादन

सीमित प्राकृतिक संसाधनों के बूते डेढ़ अरब की आबादी का पेट भरना आसान नहीं होगा। यह केवल तभी संभव है, जब घरेलू किसानों को आधुनिक तकनीक मुहैया कराई जाए। वैश्विक स्तर पर बायो टेक्नोलाजी के सहारे सीड टेक्नोलाजी अपने चरम पर है, जो बिना कीटनाशक और न्यूनतम फर्टिलाइजर से अधिकतम पैदावार दे रही है, तब भी भारत में इसकी अनुमति न जाने कहां अटकी हुई है।

फसलों के विविधीकरण को मिलेगा बल

परंपरागत खाद्यान्न वाली फसलों के 30 करोड़ टन के मुकाबले अकेले बागवानी फसलों की उपज 35 करोड़ टन पहुंच गई है। इस क्षेत्र को बढ़ावा देने से फसलों के विविधीकरण को बल मिलेगा। इसके अलावा कृषि क्षेत्र में कुशल मानव संसाधनों की जरूरत के लिए शिक्षा व अनुसंधान विकास और प्रसार की सतत जरूरत है।

एमएसपी के अलावा कुछ और चाहिए...

भुवनेश्वर त्रिपाठी

एक वर्ष तक चला किसान आंदोलन गत माह उस समय समाप्त हुआ जब सरकार ने तीनों विवादास्पद कृषि कानूनों को संसद में निष्प्रभावी कर दिया। सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को कानूनी बनाने पर विचार करने पर भी सहमति जताई। जानकारी के मुताबिक सरकार ने किसान समूहों से कहा है कि वे इस विषय में बनने वाले पैनल के सदस्यों के लिए नाम सुझाएं। पैनल का दायरा काफी व्यापक होगा। यह समिति न केवल एमएसपी को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के सुझाव देगी बल्कि आशा की जा रही है कि यह प्राकृतिक खेती और बदलती जरूरतों के अनुसार फसल चक्र को वैज्ञानिक ढंग से बदलने जैसे विषयों पर भी राय देगी।

स्पष्ट है कि इस समिति की राय कृषि क्षेत्र के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होगी। हालांकि मौजूदा हालात को देखते हुए ध्यान इस बात पर केंद्रित रहेगा कि समिति एमएसपी के मसले से कैसे निपटती है। सरकार ने 23 फसलों के लिए एमएसपी घोषित किया है लेकिन प्रमुख तौर पर चुनिंदा राज्यों में चावल और गेहूं की खरीद की जाती है। समेकित स्तर पर देखा जाए तो सरकारी हस्तक्षेप की पहुंच और प्रभाव बहुत सीमित हैं। जैसा कि अशोक गुलाटी और रंजना रॉय ने अपने एक आलेख में जनगणना और राष्ट्रीय खातों के आंकड़ों के हवाले से कहा था कि केवल 5.6 फीसदी किसानों को ही एमएसपी का लाभ मिलता है। कृषि उपज के मूल्य के हिसाब से केवल 2.2 फीसदी को ही एमएसपी का लाभ मिलता है।

कृषि से जुड़े परिवारों की स्थिति से संबंधित राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की ताजा रिपोर्ट भी यह दिखाती है कि एमएसपी व्यवस्था से लाभान्वित होने वाले परिवार और उत्पादन दोनों सीमित हैं। इतना ही नहीं एमएसपी के लाभ के वितरण में भी देश भर में असमानता है। पंजाब और हरियाणा के किसानों को एमएसपी व्यवस्था का सबसे अधिक लाभ मिला है। हालांकि अब इसका प्रसार कुछ अन्य राज्यों में भी हुआ है। एमएसपी व्यवस्था का स्तर और इसका प्रसार यही संकेत करता है कि सरकार इसमें बड़े पैमाने पर इजाफा नहीं कर सकती है। वह पहले ही सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा बांटे जाने वाले अनाज की तुलना में कहीं अधिक अनाज की खरीदारी कर रही है।उसके पास इतनी क्षमता भी नहीं है कि वह सभी फसलोंके लिए कीमत गारंटी दे सके। इसी प्रकार एमएसपी के जरिये किए जाने वाले हस्तक्षेप का विस्तार करने से कृषि क्षेत्र को उभरती मांग की परिस्थितियों के साथ तालमेल का अवसर नहीं मिलेगा। गेहूं और चावल का चक्र अस्थायी होता जा रहा है, खासतौर पर पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में। ऐसे में पैनल और सरकार को किसानों की मदद के अन्य तरीके तलाशने होंगे। अहम मदद वाला एक अन्य विकल्प है किसानों को आय अंतरण।

सरकार पहले ही पीएम-किसान योजना के तहत सालाना 6,000 रुपए अंतरित कर रही है। सरकार रकबे के हिसाब से इसका दायरा और आकार बढ़ा सकती है। वह पानी की कमी वाले इलाकों में किसानों को पानी की खपत वाली फसलों से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करने की खातिर भी धनराशि दे सकती है। भूमिहीन श्रमिकों और बटाईदार किसानों को भी इस व्यवस्था में लाने के भी तरीके निकालने होंगे। सीधा समर्थन देने के तरीके तलाशने के अलावा सरकार को कृषि सुधारों पर जोर देते रहना होगा तथा मूल्य शृंखला को मजबूत बनाना होगा। अब निरस्त किए जा चुके कानूनों का उचित बचाव करने के बावजूद सरकार एक बार फिर कीमतें कम करने के लिए भंडारण सीमा और वायदा कारोबार पर रोक लगाने जैसे कदम उठा रही है। यह किसानों की आय बढ़ाने और कृषि मूल्य शृंखला को मजबूत बनाने के विचार के प्रतिकूल है। सरकार को बाजार को काम करने देना चाहिए। उसे कृषि क्षेत्र की चिंताओं से निपटने के लिए बहुमुखी तरीके अपनाने होंगे। कीमतों की गारंटी से केवल जटिलताएं बढ़ेंगी।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आदर्श ग्राम योजनाः गांवों को विकसित करने का फैसला स्वागतयोग्य कदम

विनोद उपाध्याय

2025 तक देश भर के सभी अनुसूचित जाति बहुल गांवों को आदर्श ग्राम बना दिया जाए। वास्तव में लक्ष्य तो यह होना चाहिए कि गांवों में शहरों जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। पश्चिम के देशों में ऐसा ही है। यह आवश्यक है कि जैसे सरकार प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना पर ध्यान दे रही है वैसे ही सांसद आदर्श ग्राम योजना पर भी दे। प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत पिछड़े और खासकर अनुसूचित जाति बहुल गांवों को विकसित करने के काम को आगे बढ़ाने का फैसला एक स्वागतयोग्य कदम है। यह योजना 2009 में शुरू की गई थी, लेकिन उस पर काम शुरू हो पाया 2014 में। इसी योजना की नए सिरे से सुध लेते हुए अब अगले छह महीनों के भीतर देश के आठ हजार से ज्यादा गांव आदर्श ग्राम बन जाएंगे। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रलय ने प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत यह तय किया है कि 2025 तक देश भर के सभी अनुसूचित जाति बहुल गांवों को आदर्श ग्राम बना दिया जाए।

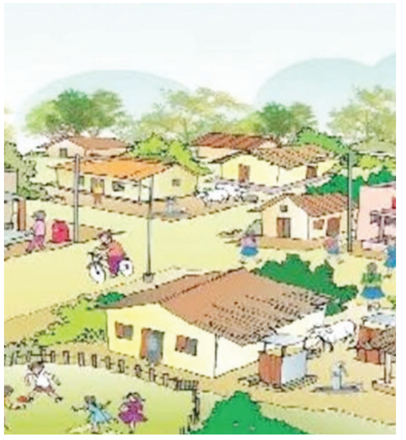

चूंकि ऐसे गावों की संख्या करीब 27 हजार है इसलिए कहीं तेजी से काम करने की जरूरत होगी। इस योजना के तहत पेयजल, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण पर ध्यान दिए जाने के साथ ही लोगों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा जाएगा और उन्हें इंटरनेट की सुविधाएं प्रदान करने के साथ ही कौशल विकास पर भी ध्यान दिया जाएगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस योजना के अमल में वैसी ढिलाई देखने को नहीं मिलेगी, जैसी सांसद आदर्श ग्राम योजना में मिल रही है। यह भी एक महत्वाकांक्षी योजना है।

प्रधानमंत्री ने सांसद आदर्श ग्राम योजना शुरू करने की घोषणा लालकिले की प्राचीर से अपने पहले कायज़्काल के प्रारंभ में ही की थी। इसके तहत प्रत्येक सांसद से यह अपेक्षित था कि वे 2014 से 2019 के बीच चरणबद्ध तरीके से तीन गांव गोद लेंगे और फिर 2019 से 2024 के बीच पांच गांव। दुभाज़्ग्य से सांसदों ने इसमें वांछित रुचि नहीं दिखाई। सरकार इससे अपरिचित नहीं हो सकती कि ऐसे सांसदों में सत्तापक्ष के भी सांसद हैं। आखिर जब सत्ताधारी दल के सांसद ही इस योजना के प्रति प्रतिबद्ध नहीं तब फिर यह अपेक्षा कैसे की जाए कि विपक्षी दलों के सांसद उसमें दिलचस्पी लेंगे?

इस पर गौर किया जाना चाहिए कि सांसद गांवों को आदर्श रूप से विकसित करने में दिलचस्पी क्यों नहीं दिखा रहे हैं? उन कारणों की तह तक जाने और उनका निवारण करने की आवश्कता है, जिनके चलते यह योजना गति नहीं पकड़ पा रही है। गांवों को मूलभूत सुविधाओं से विकसित करने की योजना पर केवल इसलिए बल नहीं दिया जाना चाहिए कि इससे ग्रामीण जनता का जीवन स्तर सुधरेगा, बल्कि इसलिए भी दिया जाना चाहिए ताकि गांवों से शहरों की ओर पलायन का सिलसिला थमे। वास्तव में लक्ष्य तो यह होना चाहिए कि गांवों में शहरों जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। पश्चिम के देशों में ऐसा ही है। यह आवश्यक है कि जैसे सरकार प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना पर ध्यान दे रही है वैसे ही सांसद आदर्श ग्राम योजना पर भी दे।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पहला स्वतंत्रता संग्राम और भोपाल-सीहोर की शहादत

राजेश बैन

मप्र जनसम्पर्क के अधिकारी

आजादी के अमृत महोत्सव के इस वर्ष में हम याद कर रहे हैं अपने उन क्रांतिकारियों को जिन्होंने भारत माता को आजाद करवाने के लिए पहले-पहल क्रांति की ज्वाला प्रज्जवलित की थी। भोपाल से शुरू हुआ आजादी के इस पहले संग्राम ने अंग्रेजों के शासन को जोरदार टक्कर दी। मातृभूमि को स्वतंत्र कराने वाले इन वीरों को देश कभी भी भूल नहीं सकेगा। अब से 164 साल पहले यानि 15 जनवरी 1858 को शाम 6 बजे कर्नल हयूरोज ने 149 क्रांतिकारियों को सीहोर कॉन्टिंजेंट में एक लाइन में खड़ा कर गोली मार दी।

भोपाल गजेटियर का संदर्भ 149 क्रांतिकारियों को लम्बी लाइन में खड़ा कर गोली मारने की पुष्टिकर्ता है तो सीहोर में जनश्रृति और एक प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र की रिपोर्ट में इस संख्या को 356 बताया गया है। भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम की कहानी भी रोंगटे खड़े करने वाली है और आज की तथा आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कहानी कुछ ऐसी है कि अप्रैल, 1857 में भोपाल बेगम को पत्थर पर लिखकर छपाई गई क्रांति कारियों की एक उदघोषणा प्राप्त हुई, जिसमें अंग्रेजों को निकाल बाहर करने और नष्ट करने का आह्वान किया गया था।

बेगम ने इस घोषणा में कहीं गई बातें ब्रिटिश एजेन्ट को सूचित कर दी और इस प्रकार अंग्रेजों के प्रति अपनी वफादारी का सबूत दे दिया। जब यह महान क्रांति मई, 1857 में भारत को आन्दोलित करने वाली थी उस समय भोपाल कॉन्टिन्जेंट सीहोर मुख्यालय में 60 तोपची, 206 घुड़सवार सैनिक तथा 600 पैदल सैनिक थे, अर्थात कुल मिलाकर 866 सैनिक थे, जिनमें सभी भारतीय थे। इस कॉन्टिन्जेंट के साथ केवल 6 अंग्रेज थे। इस कॉन्टिन्जेंट की एक टुकड़ी बेरछा में तैनात की गई किन्तु वहां कमान संभालने वाला एक भी अंग्रेज नहीं था। मेरठ तथा दिल्ली में हुई घटनाओं का समाचार सबसे पहले 13 मई, 1857 को इन्दौर में प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप, विद्रोह के अकस्मात फैलने की आशंका से कर्नल ड्यूरेंड ने 14 मई को सीहोर को भोपाल कान्टिजेंट की 2 तोपें, पैदल सैनिकों की 2 कंपनियां तथा घुड़सवारों के दो सैन्य दल भेजने के लिए अत्यावश्यक संदेश भेजा। 20 मई को इंदौर पहुंचने के लिए सैन्य दल भेज दिया गया और भोपाल क्षेत्र पर आसन्न संकट की छाया छाई रही। पड़ोस में और भारत के अन्य भागों में जो कुछ भी हो रहा था, उससे भोपाल रियासत की प्रजा प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। मध्य भारत के लिये गर्वनर जनरल के एजेन्ट राबर्ट हैमिल्टन ने भारत सरकार के सेकेट्री को लिखा कि सामान्यत:दिल्ली, लखनऊ तथा रोहिलखंड में जो कुछ भी हो रहा था, उससे भोपाल के अनेक निवासी प्रभावित थे। भोपाल के मुसलमान लोग मुगल सम्राट बहादुर शाह से सहानुभूति रखते थे और हिन्दु लोग नाना साहब पेशवा से सहानुभूति रखते थे। कैप्टन हुचिन्सन ने यह देखा कि भोपाल के अभिजात लोगों में ईसाई विरोधी तथा अंग्रेज विरोधी भावना बहुत अधिक थी। नियाज मुहम्मद खान, फौजदार मुहम्मद खा, बदी मुहम्मद खान, त्रिभुवन लाल जैसे महतवपूर्ण नेता तथा अनेक अन्य लोग उस समय वर्तमान व्यवस्था से असंतुष्ट थे। वे सिकंदर बेगम के शासन के इसलिए विरोधी थे क्योंकि वह कम्पनी सरकार के अंगूठे नीचे थी। जब अवसर आया तो ऐसे व्यक्तियों ने विद्रोह में प्रमुखता से भाग लिया। इस बीच 1 जुलाई, 1857 को इन्दौर के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। उन्हें दंडित करने के लिये भोपाल कॉन्टिन्जेन्ट कैवलरी के लगभग पचहत्तर सैनिकों का एक दल बुलाया गया। किन्तु कमांडर ट्रैवर्स को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पूरे दल में से केवल 6 सैनिकों ने उसकी आज्ञा मानी। अन्तत: अंग्रेजों को इंदौर छोड़कर जाना पड़ा। कर्नल डयूरेन्ड और उस दल के लोग, जिसमें 17 अधिकारी, 8 महिलाएं और 2 बच्चे शामिल थे, भोपाल कॉन्टिनेन्ट के कुछ सैनिकों की रक्षा में उसी दिन सीहोर चले गये। वे लोग 3 जुलाई को आष्टा और 4 जुलाई को सीहोर चले गए। सिकंदर बेगम ने उन्हें आश्रय और संरक्षण दिया। सिकंदर बेगम को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसकी मां तथा मामाओं ने उससे आग्रह किया कि वह अंग्रेजों के विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दे। शहर के मौलवी भी जिहाद का उपदेश दे रहे थे और उसके सैनिकों ने भी उसे आतंकित किया। किन्तु सिकन्दर बगेम नहीं मानी। कर्नल ड्यूरेंड तथा उसके दल के साथ वह होशंगाबाद गईं, जहां वे 8 जुलाई को सुरक्षित पहुंच गए।

कृषि सलाहः बदलते मौसम में रोग और कीटों से कैसे बचाएं अपनी फसल

मौसम में बदलाव के साथ ही फसलों में कई तरह के रोग-कीट लगने की समस्या भी बढ़ जाती है, ऐसे में अगर किसान कुछ बातों का ध्यान रखें तो नुकसान से बच सकते हैं। आईसीएआर -भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने किसानों के लिए खेती-किसानी संबंधित कृषि सलाह जारी की है। कोरोना (कोविड-19) के गंभीर संक्रमण को देखते हुए किसानों को सलाह है कि तैयार सब्जियों की तुड़ाई और अन्य कृषि कार्यों के दौरान भारत सरकार द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों, व्यक्तिगत स्वच्छता, मास्क का उपयोग, साबुन से उचित अंतराल पर हाथ धोना और एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाए रखने पर विशेष ध्यान दें। मौसम को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह है कि सरसों की फसल में चेंपा कीट की निरंतर निगरानी करते रहें। प्रारंभिक अवस्था में प्रभावित भाग को काट कर नष्ट कर दें। चने की फसल में फली छेदक कीट की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप @ 3-4 ट्रैप प्रति एकड़ खेतों में लगाएं जहां पौधों में 10-15 फीसदी फूल खिल गए हों। ओम अक्षर आकार के पक्षी बसेरा खेत के विभिन्न जगहों पर लगाए। कद्दूवर्गीय सब्जियों के अगेती फसल की पौध तैयार करने के लिए बीजों को छोटी पालीथीन के थैलों में भर कर पॉलीहाउस में रखें। इस मौसम में तैयार बन्दगोभी, फूलगोभी, गांठगोभी आदि की रोपाई मेड़ों पर कर सकते हैं। इस मौसम में पालक, धनिया, मेथी की बोवनी कर सकते हैं। पत्तों के बड़वार के लिए 20 किग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से छिड़काव कर सकते हैं। यह मौसम गाजर का बीज बनाने के लिए उपयुक्त है, इसलिए जिन किसानों ने फसल के लिए उन्नत किस्मों की उच्च गुणवत्ता वाले बीज का प्रयोग किया है और फसल 90-105 दिन की होने वाली है,वे जनवरी माह के प्रथम सप्ताह में खुदाई करते समय अच्छी, लम्बी गाजर का चुनाव करें, जिनमे पत्ते कम हो। इन गाजरों के पत्तो को 4 इंच का छोड़ कर ऊपर से काट दें। गाजरों का भी ऊपरी 4 इंच हिस्सा रखकर बाकी को काट दें। अब इन बीज वाली गाजरों को 45 सेमी. की दूरी पर कतारों में 6 इंच के अंतराल पर लगाकर पानी लगाए। इस मौसम में तैयार खेतों में प्याज की रोपाई करें। रोपाई वाले पौध छह सप्ताह से ज्यादा की नहीं होने चाहिए। पौधों को छोटी क्यारियों में रोपाई करें। रोपाई से 10-15 दिन पूर्व खेत में 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद डालें। 20 किग्रा. नत्रजन, 60-70 किग्रा. फॉस्फोरस और 80-100 किग्रा. पोटाश आखिरी जुताई में डालें। पौधों की रोपाई अधिक गहराई में ना करें और कतार से कतार की दूरी 15 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी. रखें। गोभीवर्गीय फसल में हीरा पीठ इल्ली, मटर में फली छेदक और टमाटर में फल छेदक की निगरानी के लिए फीरोमोन ट्रैप 3-4 ट्रैप प्रति एकड़ खेतों में लगाएं।

एक बार की खेती में कमाएं लाखों का मुनाफा

बांस की खेती पर सरकार देगी 50 प्रतिशत सब्सिडी

संवाददाता, भोपाल।

आजकल लोग पारंपरिक खेती छोड़कर कम खर्च में ज्यादा मुनाफे वाली खेती को प्राथमिकता दे रहे हैं। वहीं खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है और खेती पर सब्सिडी भी दे रही है। ऐसे में कम लागत में लाखों का मुनाफा दिलाने वाली खेती है बांस की खेती, जिसमें एक बार खर्च करके कई साल तक कमाई की जा सकती है। इसकी डिमांड मार्केट में हमेशा बनी रहती है। खास बात यह है कि बांस की खेती पर सरकार 50 प्रतिशत की सब्सिडी भी देती है।

बांस की खेती पर सब्सिडी

बांस की खेती में कम मेहनत और कमाई ज्यादा है, क्योंकि इसे एक बार लगाओ और कई साल के लिए फुर्सत हो जाओ। एक बार बांस लगाने पर इसकी फसल लगभग 40 साल तक बांस देती रहती है। सरकार भी ऐसी खेती में दिलचस्पी रखती है क्योंकि इसकी देश के अलावा अंतराष्ट्रीय डिमांड भी हमेशा तेज रहती है इसलिए बांस की खेती पर 50 प्रतिशत तक का अनुदान मिलता है। बांस उन कुछ उत्पादों में से एक है जिनकी निरंतर मांग बनी रहती है। कागज निर्माताओं के अलावा बांस का उपयोग कार्बनिक कपड़े बनाने के लिए करते हैं, जो कपास की तुलना में अधिक टिकाऊ होते हैं और फिर जैव ईंधन होता है, जिसे बांस से उत्पादित किया जा सकता है। यही नहीं बांस से मुनाफे की उम्मीद भी अच्छी की जा सकती है। तो आइये बांस की खेती के बारे में पूरी जानकारी जानते है।

बांस रोपण की विधि

बांस को बीज, कटिंग या राइज़ोम से लगाया जा सकता है। इसके बीज अत्यंत दुर्लभ और महंगे होते हैं। पौधे की कीमत बांस के पौधे की किस्म और गुणवत्ता पर भी निर्भर करती है। जब भूमि की तैयारी की बात आती है, तो बांस की खेती को बहुत अधिक आवश्यकता नहीं होती है। मगर इसके लिए सही दूरी की आवश्यकता होती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि बांस को पंक्तियों में 12 मीटर गुणा 4 मीटर की दूरी के साथ लगाने की जरुरत होती है। आप प्रति एकड़ लगभग 100 पौधों लगा सकते हैं. यदि आप 5 गुणा 4 मीटर की दूरी पर पौधे लगाते हैं जो अनुशंसित दूरी है, तो यह लगभग 250 पौधों के घने रोपण की अनुमति देता है और यह भी बांस की खेती के लिए पूरी तरह से संभव है।

बांस की रोपाई

अब आप सभी खरपतवार हटा दें और यदि आवश्यक हो, तो खरपतवार से छुटकारा पाने के लिए जमीन की जुताई करें। आवश्यक दूरी पर 2 फीट गहरा और 2 फीट चौड़ा गड्ढा खोदा जाना चाहिए। रोपाई के तुरंत बाद पौधे को पानी दें और एक महीने तक रोजाना वहीं पर पानी देते रहें। एक महीने के बाद, वैकल्पिक दिनों में पानी देना कम करें और 6 महीने के बाद इसे सप्ताह में एक बार कम करें।

बांस की मिट्टी, जलवायु, उर्वरक, सिंचाई और कीटनाशक

» जहां तक भारत का सवाल है, कश्मीर की घाटियों के अलावा कहीं भी बांस की खेती की जा सकती है। भारत का पूर्वी भाग आज बांस का सबसे अधिक उत्पादक है। बांस ज्यादातर वन क्षेत्रों में उगाया जाता है और वन क्षेत्र का 12फीसदी से अधिक भाग बम्बू है। निजी मालिकों द्वारा बांस की खेती सीमित है और बांस की भारी मांग इसे खेती के लिए एक आकर्षक फसल बनाती है।

» जहां तक मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों का सवाल है। वहां बांस को कहीं भी उगाया जा सकता है, जब तक कि यह अत्यधिक ठंडा ना हो। इसके लिए गमज जलवायु परिस्थितियों की जरुरत होती है, लेकिन 15 डिग्री से नीचे का मौसम बांस के लिए उपयुक्त नहीं होता है। मिट्टी का पीएच 5 से 6 के बीच होना चाहिए, जो भारत में ज्यादातर होता है। मिट्टी बहुत अधिक रेतीली नहीं होनी चाहिए. चट्टानी मिट्टी बांस की खेती के लिए संभव नहीं है।

» जहां तक उर्वरकों की बात करें, तो बांस को बहुत कम उर्वरकों की आवश्यकता होती है। 10 KG FYM प्रति वर्ष पर्याप्त से अधिक होना चाहिए। साथ ही बांस की रोपाई के समय खाद या गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए।

» जब बांस की बात आती है तो कीटनाशक का प्रयोग दुर्लभ होता है लेकिन यदि आवश्यकता होती है तो प्रति एकड़ 2000 रुपए की अतिरिक्त लागत लग सकती है।

» इसके अलावा पहले 3-4 वर्षों के दौरान सिंचाई की आवश्यकता होती है और एक ड्रिप पाइप की लागत उपयोगी होती है।

आपको करोड़पति बना सकती है महोगनी की खेती

-50 डिग्री सेल्सियस तक तापमान को सहने की क्षमता -

बाजार में काफी महंगी बिकती है महोगनी की लकड़ी

संवाददाता, भोपाल।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की करीब 58प्रतिशत आबादी के लिए कृषि आजीविका का प्राथमिक स्रोत है। लेकिन इसके बावजूद किसानों की माली हालत ठीक नहीं है। हर साल मौसम, बाढ़ या किसी अन्य वजह से लाखों किसानों की फसल बर्बाद हो जाती है और जो फसल बच जाती है उसका बाजार में सही दाम नहीं मिलता। जिसके चलते किसान हमेशा परेशान रहता है। किसानों की आमद के लिए खेती के कई ऐसे तरीके भी हैं, जिनकी मदद से लाखों-करोड़ों रुपये कमा सकते हैं। महोगनी की खेती ऐसा ही एक बिजनेस आइडिया है। इस पेड़ को लगाकर करोड़पति बन सकते हैं। अगर एक एकड़ जमीन में महोगनी के 100 से ज्यादा पेड़ लगाते हैं तो आप महज 12 साल में करोड़पति बन सकता है। एक बीघा में इसे लगाने की लागत 40-50 हजार रुपये आती है। महोगनी का एक पेड़ 20 से 30 हज़ार का बिकता है। ऐसे में आप अपने खेत में बड़े स्तर पर इसकी खेती कर करोड़ रुपये कमा सकते हैं। न सिर्फ इसकी कीमत ज्यादा है, बल्कि इस पेड़ में औषधीय गुण भी हैं और इसकी लकड़ी कई मायनों में गुणों से परिपूर्ण है।

क्या है महोगनी का पेड़

महोगनी की लकड़ी मजबूत और काफी लंबे समय तक उपयोग में लाई जाने वाली लकड़ी होती है। महोगनी की लकड़ी बाजार में काफी महंगी मिलती है। यह लकड़ी लाल और भूरे रंग की होती है। इस पर पानी का भी कोई असर नहीं पड़ता। यह पेड़ 50 डिग्री सेल्सियस तक तापमान को सहने की क्षमता रखता है और जल न भी हो तब भी यह लगातार बढ़ता ही जाता है।

महोगनी की कीमत

महोगनी का पौधा पांच वर्षों में एक बार बीज देता है। इसके एक पौधे से पांच किलों तक बीज प्राप्त किए जा सकते है। इसके बीज की कीमत काफी ज्यादा होती है और यह एक हजार रुपये प्रतिकिलो तक बिकते है। वहीं, इसकी लकड़ी होलसेल में कम से कम दो हजार से 2200 रुपए प्रति घन फीट बिकती है।

कैसे काम आती है महोगनी की लकड़ी

महोगनी की लकड़ी फर्नीचर और बंदूक का कोंदा बनाने के काम आती है। इसके अलावा इससे नाव भी बनाई जाती है। मेडिकल के लिए भी यह काफी बेशकीमती माना जाता है। इसके पत्तों का उपयोग मुख्य रूप से कैंसर, ब्लडप्रेशर, अस्थमा, सर्दी और मधुमेह सहित कई प्रकार के रोगों में होता है। इसके अलावा इसकी पत्तियों और बीज के तेल का इस्तेमाल मच्छर मारने वाली दवाइयों और कीटनाशक को बनाने में किया जाता है। इसके तेल का उपयोग कर साबुन, पेंट, वार्निस और कई तरह की दवाइयों को बनाया जाता है।

अच्छे मुनाफे के लिए करें चिरायता की खेती

इसमें है कई आयुर्वेदिक गुण

अक्सर किसानों को एक चिंता सताती है कि वह किस फसल की खेती से अच्छा और ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं। अगर आप भी यही सोच रहे हैं, तो आपको चिरायता उगाने से तगड़ा मुनाफा हो सकता है, क्योंकि इसमें जबरदस्त गुण होते हैं। इसको कोई झुठला नहीं सकता है। दरअसल, इसका उपयोग अच्छी सेहत के लिए किया जाता है। तो आइये जानते हैं कि चिरायता की खेती कैसे की जाती है।

क्या है चिरायता

यह एक लोकप्रिय आयुर्वेदिक जड़ी बूटी है, जो मुख्य रूप से भारत से लेकर भूटान तक हिमालय के उप-समशीतोष्ण क्षेत्रों में बढ़ती हुई पाई जाती है। चिरायता अपने विशिष्ट कड़वे स्वाद के लिए जाना जाता है। इसकी ऊंचाई आमतौर पर 3-4 फीट होती है और इसमें बैंगनी रंग के हरे-पीले फूल होते हैं।

चिरायता के लिए जलवायु और मिट्टी

इसकी खेती के लिए दोमट से बालू दोमट, भुरभुरी और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी को खेत की खाद से समृद्ध किया जाना चाहिए और यदि मिट्टी चिकनी है, तो रेत को भी मिलाने की आवश्यकता होती है। फसल को वर्षा ऋतु में हल्की वर्षा (100 सेमी) वाले क्षेत्रों में और लंबे समय तक ठंडे सर्दियों वाले क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। यह ज्यादातर बर्फबारी होने वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है.

चिरायता की फसल की परिपक्वता और कटाई

गर्मियों के दौरान या अक्टूबर-नवंबर में पूरी तरह से उगने पर पौधों को एकत्र किया जाता है। पौधे छह से आठ महीने के भीतर फूलते हैं और इस प्रकार साल भर उपज के लिए बीज प्रदान करते हैं। जब जल्दी कटाई की जाती है. कुछ पौधों को खेतों में छोड़ दिया जाता है, ताकि बीज परिपक्व हो जाएं।

चिरायता के सिंचाई के तरीके

पौधों को स्थिर नमी से बचाने के लिए विशेष रूप से बारिश के दौरान खेतों के चारों ओर चैनल खोदकर एक उचित जल निकासी व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर खेत की सिंचाई गर्मियों में प्रत्येक दिन और जाड़ों में साप्ताहिक की जानी चाहिए।

चिरायता के आयुर्वेदिक और औषधीय गुण

इस विश्वसनीय जड़ी बूटी से बुखार, त्वचा विकार रोग, भूख बढ़ाना, पाचन क्रिया में मददगार, सांस लेने में सहायक, मधुमेह, अधिक प्यास से राहत, रक्तस्राव को रोकना, अपच, गले की खराश से राहत, खांसी से राहत, दस्त, पीलिया और एनीमिया का इलाज करता है।

सीमित कृषि उत्पादों के साथ आत्मनिर्भरता की ओर किसान

स्मार्ट कृषि यंत्र, जो खेती में डबल कर सकते हैं मुनाफा

भोपाल। मशीनरी ने कृषि उत्पादों का चेहरा हमेशा के लिए बदल दिया है। भारत में औद्योगिक क्रांति से पहले लोग खेती को सीमित कृषि उत्पादों के साथ आत्मनिर्भर होने के लिए इस्तेमाल करते थे। आज यह सब बदल गया है। सभी क्षेत्रों में मशीनरी की शुरुआत के साथ, कृषि औद्योगिक क्रांति के मद्देनजर तेजी से हुई प्रगति हुई है। इसके साथ ही मशीनरी की मदद से अधिक भोजन का उत्पादन किया जा रहा है, जो आज के समय की मांग है. आधुनिक कृषि को अपनाने से बने किसान अब स्मार्ट बन रहे हैं, साथ ही किसान स्मार्ट कृषि उपकरण का इस्तेमाल कर अपनी आमदनी में भी बढ़ोतरी कर रहे हैं।

बने आधुनिक स्मार्ट फार्म: आज जो किसान स्मार्ट खेती कर रहे हैं। वे आधुनिक तकनीक से बने खेती के नए औजारों का इस्तेमाल कर अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। जिससे उनकी आमदनी बढ़ रही है। आप भी एक चतुर किसान बनें और इस कृषि उत्पादन में बेहतर परिणाम देने वाले कृषि यंत्रों का उपयोग करके अपनी आय में वृद्धि करें। इस समय कंपनियों ने किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए अपने उत्पादों की कीमतों में भी कमी की है।

यह कृषि उपकरण उत्पादन और आय वृद्धि में हो सकते हैं सहायक

स्प्रेयर- कृषि कार्य में उपयोग होने वाले कृषि स्प्रेयर बाजार में 2 और 4 स्ट्रोक स्प्रे पंप में उपलब्ध हैं। इन्हें कुछ फीचर्स के साथ बाजार में उतारा गया है। इसकी मदद से किसान आसानी से अपने खेतों में फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव कर सकता है। इसके अलावा इनका उपयोग पर्यावरण की सफाई के लिए भी किया जा सकता है। यह एक किफायती मूल्य सीमा यानी 9,000 – रु से 22,000.में रुपये उपलब्ध रहती है।

हार्वेस्टर- कंबाइन हार्वेस्टर का उपयोग खेती की प्रक्रियाओं जैसे कि कटाई, थ्रेसिंग और विनोइंग के लिए किया जाता है। कम्बाइन हार्वेस्टर सबसे अच्छी मशीन है। जिसका उपयोग सभी प्रकार की फसलों जैसे जौ, गेहूं, राई, जई, मक्का, और बहुत कुछ करने के लिए किया जाता है। अच्छे कंबाइन हार्वेस्टर की कीमत 24.5 लाख से 28 लाख रुपये से शुरू होती है।

कल्टीवेटर- कल्टीवेटर सबसे आवश्यक कृषि मशीनों में से एक है, जिसका उपयोग जुताई गतिविधियों के लिए किया जाता है। यह सबसे पुरानी खेती की मशीन है, जिसका उपयोग कई वर्षों से किया जा रहा है। 9 टाइन वाले महिंद्रा कल्टीवेटर की कीमत बहुत सस्ती है। हर कल्टीवेटर की कीमत 19,000 से 80,000 रुपये से शुरू होती है।

सीड ड्रिलर- रोटो सीड ड्रिल खेती के लिए लोकप्रिय मशीनों में से एक है। इसका उपयोग लगभग पूरे भारत में गेहूं, जौ, घास के बीज बोने के उद्देश्य से किया जाता है। इसमें बीजों की कम बर्बादी के साथ बीज की किस्मों को बदलने का एक आसान ऑपरेटिंग सिस्टम होता है। इसकी कीमत 1.4 लाख से 1.37 लाख रुपये से शुरू होती है। यह किसानों के लिए सबसे अच्छा कृषि उपकरण है।

स्प्रेडर- खाद स्प्रेडर एक मशीन है, जिसका उपयोग कृषि उद्देश्यों के लिए किया जाता है। कृषि प्रयोजनों में इसका मुख्य काम खाद को खेत में ढंग से फैलाना है। यह सस्ती कीमत पर उपलब्ध है। जी हां यह 55,000 से 5.00 लाख रुपये से शुरू होती है ताकि हर किसान इसे आसानी से खरीद सके।

ट्रॉली पंप- ट्रॉली पंप उन किसानों के लिए अधिक उपयोगी है, जिनके पास खेती के लिए काफी जमीन है। इसमें कम समय में कीटाणुनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। इससे किसानों के श्रम और समय की बचत होगी और उपज में भी वृद्धि होगी। इसके बेहतरीन फीचर्स के हिसाब से इसकी कीमत से कोई समझौता नहीं करेगा। यह एक बहुत ही किफायती मूल्य सीमा पर आता है जो 19,000 रु- 60,000 रुपये से शुरू होता है।

ग्वालियर में 24 से ज्यादा पूर्व सरपंचों को जेल भेजने की तैयारी

शासकीय राशि का अपने हित में उपयोग करने वालों की खैर नहीं

दिव्या मिश्रा, ग्वालियर।

शासकीय धनराशि निकालकर उसका उपयोग जनता के हितों में नहीं कर राशि का दुरुपयोग करने वाले पूर्व सरपंचों को जेल भेजा जाएगा। जिला पंचायत सीइओ आशीष तिवारी ने दो सरपंचों को जेल भेजने का वारंट जारी कर दिए हैं। इसके साथ ही करीब दो दर्जन ऐसे और भी पूर्व सरपंच हैं जिन्होंने शासकीय राशि में गड़बड़ी की है। इन सभी की फाइलों को खंगाला जा रहा है। पैसे जमा नहीं कराने पर इन सभी को जेल भेजा जाएगा। ग्राम पंचायत लदवाया के पूर्व सरपंच राजेन्द्र सिंह द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के तहत शासकीय प्राथमिक विद्यालय बझेरा में अतिरिक्त कक्ष और शासकीय प्राथमिक विद्यालय मानपुर में भी अतिरिक्त कक्ष निर्माण के लिए लगभग 2 लाख 19 हजार 560 रुपए की राशि निकाली थी। लेकिन इन दोनों विद्यालयों में निर्माण कार्य पूर्ण नहीं कराया गया। इसी प्रकार ग्राम पंचायत बड़ेरा फुटकर के पूर्व सरपंच घनश्याम शर्मा ने शासकीय प्राथमिक विद्यालय बड़ेरा फुटकर, प्राथमिक विद्यालय चकबहादुरपुर, सेटेलाइट शाला बड़ेरा कॉलोनी और शासकीय माध्यमिक विद्यालय बड़ेरा फुटकर में सर्व शिक्षा अभियान के तहत अतिरिक्त कक्ष व अन्य कार्यों के लिए 2 लाख 50 हजार रुपये से अधिक की धनराशि निकाली थी। लेकिन उन्होंने निर्माण कार्य पूर्ण नहीं कराया। इसके चलते सीइओ जिला पंचायत आशीष तिवारी ने इन सभी को नोटिस जारी कर पैसे वापस जमा करने के निर्देश दिए। लेकिन पैसा जमा नहीं करने पर इनके खिलाफ जेल वारंट जारी कर दिए हैं। इससे पूर्व भी सीइओ जिला पचांयत करीब एक दर्जन पूर्व सरपंचों को जेल भेज चुके हैं। वहीं करीब दो दर्जन पूर्व सरपंच ऐसे हैं जिन्हें जेल भेजा जाना है।

बालाघाट में 5 क्विंटल प्लास्टिक से बनाई मुन्ना टाइगर की प्रतिकृति

बालाघाट। टाइगर स्टेट मध्यप्रदेश में बालाघाट बाघों के लिए अपनी अलग पहचान रखता है। इस पहचान को यंग जनरेशन तक पहुंचाने और इसकी अहमियत समझाने के लिए इन दिनों अनोखे प्रयास हो रहे हैं। नगर पालिका की पहल पर शहर के मोती गार्डन में प्लास्टिक वेस्ट से मुन्ना टाइगर और मशरूम की रेप्लिका (प्रतिकृति) तैयार की गई हैं। कान्हा नेशनल पार्क का मुन्ना टाइगर (टी-17) मशहूर रहा है। दरअसल, नगर पालिका बालाघाट ने स्वच्छता अभियान के तहत लोगों को अवेयर करने प्लास्टिक से आर्ट पीस बनाने का अभियान शुरू किया है। इस आर्ट पीस को लांजी की आर्टिस्ट रानी मडामे ने तैयार किया है। वेस्ट प्लास्टिक से तैयार ये आर्ट वर्क उनके करियर की पहली कलाकृति है। 2021 में खैरागढ़ यूनिवर्सिटी से बैचलर और मास्टर ऑफ फाइन आर्ट इन स्कल्पचर विषय में पढ़ाई कर चुकीं लांजी की आर्टिस्ट रानी मडामे ने बताया कि मोती गार्डन में टाइगर और मशरूम की रेप्लिका बनाने में उन्हें करीब दो हफ्ते का समय लगा। इसके लिए करीब 5 क्विंटल वेस्ट पॉलीथिन और 4 से 5 हजार खराब प्लास्टिक बोतल इस्तेमाल की गई है, जो कचरे के ढेर में पड़े-पड़े पर्यावरण को दूषित कर रही थी।

खेत की जुताई और बोवनी खुद कर लेता है ऑटोनोमस ट्रैक्टर

भोपाल। खेत की जुताई-बुवाई में उपयोग होने वाले ट्रैक्टर के पीछे लगा लोहे का भारी-भरकम हल जॉन डियर ने सन 1837 में बनाया था। इस कंपनी ने किसानों के लिए बहुत ही काम की चीज बनाई है। इसी कड़ी में कंपनी ने एक नया नवाचार करते हुए अपने आप चलने वाला ट्रैक्टर सार्वजनिक किया है। इस नए ऑटोनोमस ट्रैक्टर का नाम अभी 8 आर रखा गया है। तो आइए इस लेख में नए टैक्टर की खासियत बताते हैं। इस ट्रैक्टर में छह कैमरे लगे हैं।

इनके जरिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल कर खुद ही चौतरफा वातावरण का अनुमान लगा लेता है और आगे का रास्ता तय कर लेता है। इसे खेत में जिस रास्ते पर डाल दिया जाए, उस पर खुद अपनी राह बना लेता है। वहीं, आस-पास की स्थितियों से तालमेल भी बिठा लेता है।

यानि इस ट्रैक्टर को बार-बार निर्देश देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यह खुद ही निधार्रित क्षेत्र में खेत की जुताई और बीजों की बुवाई का काम पूरा कर लेता है। अगर कोई बाधा आ जाए, तो उसे भी खुद ही हटाकर आगे बढ़ता है। इसके साथ ही किसान जरूरत के हिसाब से ऑटोनोमस ट्रैक्टर को नए निर्देश भी दे सकता है। जैसे, ट्रैक्टर को नए क्षेत्र में भेजना, काम बदलना, काम रोककर मशीन को खेत से वापस बुला लेना आदि. सबसे खास बात यह है कि आप ये सभी निर्देश स्मार्ट फोन के जरिए कहीं से भी दे सकते हैं। हालांकि, मौजूदा वक्त में कुछ और ट्रैक्टर भी हैं, जो अपने आप चल सकते हैं। मगर उनकी अपनी सीमाएं होती हैं।

ऑटोनोमस ट्रैक्टर की कीमत

यह ऑटोनोमस ट्रैक्टर अमेरिका के लॉस वेगास में कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक शो-2022 में जॉन डियर कंपनी ने प्रदर्शित किया है। अभी कंपनी ने इसकी कीमत का खुलासा नहीं किया है, लेकिन अनुमान है कि इसकी कीमत लगभग 8 लाख डॉलर तक हो सकती है।

नई तकनीक के लाभ हैं, तो कुछ नुकसान भी

इससे कृषि क्षेत्र में श्रमिकों की अनुपलब्धता की समस्या से छुटकारा मिल जाएगा। इसके अलावा नुकसान भी दो तरह के हैं। पहला- कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल जितना बढ़ेगा, उतना कामगारों के हाथ से काम छूटता जाएगा। तो वहीं दूसरा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए कुछ निजी जानकारियों-आंकड़ों आदि की आवश्यकता पड़ती है। यह डाटा उस कंपनी के पास सुरक्षित होता है, जिसने संबंधित मशीन बनाई है।

» जयपुर, दिल्ली, वड़ोदरा, अहमदाबाद की मंडियों से मिल रही शुभम को एडवांस बुकिंग

» चार बीघा जमीन पर लोन लेकर एक पॉली हाउस खोला

आईआईटी प्रोफेशनल ने आपदा को बनाया अवसर, शुरू की खेती, कर रहे अच्छी कमाई

संवाददाता, इंदौर।

इंदौर के जगजीवन गांव में रहने वाले शुभम चौहान ने गुवाहाटी आईआईटी से इलेक्ट्रॉनिक टेलीकम्युनिकेशन में डिग्री हासिल करने के बाद कुछ अलग राह चुनी। शुभम ने 2017 में पहले छह महीने दुनिया की नामी आईटी कंपनियों में से एक एक्सेंचर में नौ लाख रुपए के पैकेज पर काम किया और उससे मिले पैसे से पढ़ाई का कर्ज 49 लाख रुपए चुकाया। फिर नौकरी छोड़ खेती के इरादे से गांव की राह पकड़ी। शुभम के पिता रमेश चौहान पेशे से ड्राइवर हैं।

नौकरी छोड़ ढूंढा आपदा में अवसरः शुभम ने चार बीघा पारिवारिक जमीन पर लोन लेकर एक पॉली हाउस खोला। पॉली हाउस में उन्होंने खेती शुरू की और महज दो साल बाद सालाना 16 से 18 लाख रुपए की शिमला मिर्च और खीरा की पैदावार करने लग गए। अब इंदौर सहित जयपुर, दिल्ली, वड़ोदरा, अहमदाबाद की मंडियों से शुभम को एडवांस बुकिंग मिल रही है। दो साल में ही बैंक से लिया खेती के लिये 50 लाख का लोन भी लगभग 25 लाख चुका दिया। एक एकड़ के पॉली हाउस में शुभम सालाना 150 टन तक खीरा, ककड़ी की पैदावार कर लेते हैं। जमीन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए रोटेशन में खीरे के अलावा शिमला मिचऱ भी लगाते हैं।

-लाकडाउन में हुई परेशानी

शुभम का कहना है कि गांव में खुद का कुछ करने का सपना था और घर में एक छोटा भाई, छोटी बहन हैं। बड़े भाई होने के नाते जिम्मेदारी भी थी। इसलिए आईटी की नौकरी छोड़ दी। खेती के दौरान लॉकडाउन में मंडिया भी बंद हुई। उस समय बैंक की एक किश्त भी ड्यू हुई। बाद में एक एकड़ जमीन से कजर्ज उतारना आसान नहीं था। लेकिन हार नहीं मानी। जैसे ही शहर अनलॉक हुआ तो पुराना सामान बेच देशी तर्ज पर पाली हाऊस जैसा स्ट्रक्चर तैयार किया और उसमें भी खीरा, ककड़ी, शिमला मिर्च उगाए। कुछ दिनों में पैदावार तैयार हो जाएगी और बचा बैंक लोन भी अदा हो जाएगा। शुभम की मां सन्तोष चौहान का कहना है कि हमें उम्मीद नहीं थी। लेकिन हमारे बेटे ने खेती में ही नौकरी से ज्यादा कमाई शुरू कर दी है।

फैसले से परिवार सहमत, मां-बाप खुश

मां का कहना है कि मेरे पति तो ड्राइवर थे हमारा क्या होता बड़ी मुश्किल से हमने शुभम की पढ़ाई पूरी की है। अब लगता है शुभम के जरिए हमारा बुढ़ापा सुधर जाएगा। अब हमें चिंता करने की जरूरत नहीं है। शुभम का कहना है कि 1 एकड़ में पाली हाऊस बनाकर खेती से हो रही आमदनी से खुश हैं। परिवार भी उनके इस फैसले से सहमत है। अब उनका अगला लक्ष्य प्लानिंग एंड यूजर तक पहुचंना का है। किसी काम को यदि ठान लिया जाए तो जरूर होगा और आप कामयाब होंगे।

ग्राम साली एवं भागसूर क्षेत्र भी टमाटर की आधुनिक खेती करने वालों की श्रेणी में

बड़वानीः टमाटर की वैज्ञानिक खेती से किसान हुए समृद्ध

हेमंत शर्मा, बड़वानी।

जिले का नागलवाड़ी क्षेत्र संकर टमाटर की खेती के लिए प्रसिद्ध है। कृषि विज्ञान केन्द्र बड़वानी के वैज्ञानिकों तथा ग्राम साली एवं भागसूर के कृषकों की मेहनत से अब ये क्षेत्र भी टमाटर की आधुनिक खेती करने वालों की श्रेणी में आ गया है। बड़वानी जिले के करीब 1200 एकड़ से अधिक क्षेत्रफल में संकर टमाटर की सफल व्यवसायिक एवं लाभदायक खेती की जा रही है। जिसके उत्पादन को मुंबई, नासिक, बेंगलुरू, गोवा, सूरत, अहमदाबाद पूना एवं देश की राजधानी दिल्ली तक भेजा जा रहा है। गाम साली के प्रगतिशील कृषक नारायण पिता भगवान परिहार ने 1 एकड़ क्षेत्र में टमाटर की सकर किस्म रिशिका 225 की रोपाई उठी बेड पद्धति से मल्चिंग, ड्रिप एवं सधाई हेतु बॉस एवं तार का उपयोग करके 22 सितंबर 2021 को की गई, जिसमें उत्पादन के तौर पर प्रथम तुड़ाई में 23 कैरेट (25 किग्रा प्रति केरेट), द्वितीय, तृतीय, चौथी तुड़ाई मे कमशः 45, 105 तथा 150 केरेट उपज प्राप्त हुई। किसान ने बताया कि रोपाई पूर्व 4-5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद को खेत में मिलाया

गया। एनपीके 19:19:19 को 2 किग्रा./ एकड़ डीएपी 3 बैग प्रति एकड 1 बैग पोटाश एवं 2 बैग सुपर फास्फेट उर्वरक प्रति एकड़ की दर से प्रयोग किया गया।

फसल का प्रबंधन कृषि विज्ञान केन्द्र बड़वानी के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एस.के. बड़ोदिया एवं डॉ. डी.के. जैन के मागदर्शन में किया गया रोपाई के 10 दिन बाद आधार खाद के रूप में एनपीके, आनंदम, सल्फर, डीएपी पोटाश का मिक्सचर पौधे की तने से 10-12 सेमी की दूरी पर 6-7 सेमी गहराई में 40-50 ग्राम प्रति पौध डाला। रोपाई सर्दी में की गई और टपक सिंचाई द्वारा प्रतिदिन 8-10 घंटे के अंतराल से 2-3 घंटे तक सिचाई की।

एक एकड़ में मिली 560 क्विंटल उपज

इस प्रकार 1 एकड़ में लगभग कुल उपज 560 क्वि. से अधिक प्राप्त हुयी जिसकी बिक्री कर नारायण जी को लगभग कुल आय 4 लाख 76 हजार एवं कुल आय 2 लाख 61 हजार प्राप्त हुयी ग्राम लोनसरा के कृषक राजू परमार, संतोष, हरीनारायण और संजय कुशवाह ग्राम जलगोना ने बताया कि टमाटर की खेती केवीके के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में करने एवं समन्वित रोग एवं कीट प्रबंधन अपनाने से लागत में कमी एवं आय में वृद्धि हो रही है। जिसके कारण आस-पास के अन्य कृषक बन्धु भी प्रोत्साहित होकर कृषि विज्ञान केन्द्र से सलाह एवं अन्य टमाटर उत्पादक कृषकों से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर वैज्ञानिक खेती अपना रहे है। टमाटर की संकर प्रजाति रिशिका-225 का चयन किया और उच्च गुणवता के पौधों का रोपण उठी हुई क्यारी पद्धति से किया। इसमें एक से दूसरी क्यारी की दूरी 6 फीट एवं पौध से पौध की दूरी एक फीट रखी गई है। ड्रिप सिंचाई के लिए पाइप बिछाकर प्लास्टिक मल्चिंग का प्रयोग किया गया। किसान ने बताया कि उत्पादन नवंबर से मिलने लगा है। अभी तक नौ एकड खेत से 14 तुड़ाई की है। 4-5 तुड़ाई बाकी है पूरी उपज मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में 500 विव उत्पादन प्राप्त किया कुल आय 4 लाख 76 हजार हो चुकी है। प्रति एकड़ उपज से तीन लाख 20 हजार रुपए का मुनाफा हो चुका है। उपज लेने में अब तक प्रति एकड़ एक लाख 70 हजार रुपए खर्च किए हैं।

बगिया में देसी-विदेशी फल-सब्जी की खेती

कृषि विज्ञान केंद्र सिंगरौली के वैज्ञानिक दुर्लभ किस्मों पर कर रहे प्रयोग आधारित खेती

अखिलेश द्विवेदी, सिंगरौली। कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि वैज्ञानिकों ने प्रयोग आधारित खेती शुरू कर दी है। वैज्ञानिकों ने देश-विदेश के फल व सब्जी सहित सामान्य फसलों की खेती शुरू की है। वैज्ञानिकों की ओर से शुरू प्रयोग में कई ब्रोकली, कुन्दोवा, कुल्थी और ड्रैगन फ्रूट जैसे पौधे भी तैयार किए जा रहे हैं। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. जय सिंह का कहना है कि जिन फसल व किस्मों पर प्रयोग सफल होगा। उन फसलों व किस्मों में किसानों को शामिल किया जाएगा। प्रयोग तीन से 5 वर्ष का है। प्रथम दो वर्ष में प्रयोग प्रक्षेत्र में होगा और फिर अगले तीन वर्ष में कुछ चुनिंदा किसानों से खेती कराई जाएगी। बेहतर परिणाम मिले तो सामान्य किसानों को खेती के लिए प्रेरित किया जाएगा।

थाइलैंड व नगालैंड से मंगाए पौधे- 20 एकड़ के कृषि विज्ञान केंद्र को विकसित किया गया है। जिसके बाग को समृद्ध बनाने के लिए थाईलैंड व नगालैंड से पौधे मंगाए गए हैं।

ओबी व फ्लाईऐश में खेती पर भी प्रयोग

कृषि प्रक्षेत्र में कृषि वैज्ञानिकों ने कोल खदानों से निकलने वाली मिट्टी (ओबी यानी ओवर बर्डेन) व विद्युत उत्पादक कंपनियों से निकलने वाले फ्लाईऐश (कोयले की राख) पर भी खेती करने की योजना बनाई है। उद्देश्य यह जानना है कि कैसे इनमें सफल खेती हो सकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि प्रयोग के जरिए यह जानने की कोशिश की जाएगी कि बंद खदानों में ओबी व फ्लाईऐश से भरकर खेती की जाए तो सफल होगी या नहीं। वैज्ञानिकों का मानना है कि 25 से 50 वर्षों बाद यहां गहरी खदानों की संख्या काफी अधिक होगी। जिला उजड़े नहीं, इसके लिए यह प्रयोग किया जा रहा है। इससे ओबी व फ्लाईऐश का उपयोग भी हो सकेगा।

पन्ना के कृषि वैज्ञानिकों ने उगाई पोषक तत्वों से भरपूर पीले रंग की गोभी

नदीम खान, पन्ना।

पन्ना कृषि विज्ञान केंद्र पन्ना के वैज्ञानिकों ने केंद्र के पोषण वाटिका में पोषक तत्वों से भरपूर रंगीन गोभी उगाई है। पीले रंग की यह गोभी कैरोटिना संकर प्रजाति की है। एक से दो किलो के औसत फूल वजन वाली गांभी यह फसल 60 से 65 दिन में तैयार हो जाती है। कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पीएन त्रिपाठी के मार्गदर्शन में कार्यालय स्थिति पोषण वाटिका संकर गोभी किस्म कैरोटिना लगाई गई थी। जिसकी तुड़ाई की गई। तुड़ाई के दौरान डॉ आरके जायसवाल, डॉ आरपी सिंह, डीपी सिंह, रितेश बागोरा, हरिहर सिंह यादव, जया कोरी एवं देशराज प्रजापति उपस्थिति थे ।

फूल पहला होने के साथ पोषक तत्वों से भरपूर

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार इस किस्म का फूल पीला होने के साथ-साथ पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसमें विटामिन ए प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसमें अत्यधिक मात्रा में एंटी ऑक्सीडेंट मूल्य विद्यमान होते हैं और इसके फूल का औसत वजन से 2 किलोग्राम तक होता है। इसका उत्पादन पौध रोपण के 60-65 दिन सिंह, रितेश बागोरा, हरिहर सिंह बाद होता है। इस दौरान डॉ. आरके यादव, जया कोरी एवं देशराज जायसवाल, डॉ. आरपी सिंह, डीपी प्रजापति की उपस्थिति रही। इसमें अत्यधिक मात्रा में एंटी ऑक्सीडेंट मूल्य विद्यमान होते हैं। इसकी फूल का औसत वजन 01 से 02 किलोग्राम तक होता है। इसका उत्पादन पौध रोपण के 60-65 दिन बाद होता है।

मुख्यमंत्री पहुंचे अशोकनगर-निवाड़ी के गांव और कहा संकट की घड़ी में किसानों के साथ हूं, दी सख्त हिदायत, कहा-

मुआवजा के सर्वे में दो प्रतिशत ज्यादा भले लिख देना कम नुकसान दिखाया तो मैं नौकरी के लायक नहीं रहने दूंगा

प्रशासनिक संवाददाता, भोपाल।

प्रदेश में ओलावृष्टि से बर्बाद किसानों की फसलों का निरीक्षण करने के लिए खुद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मैदान में उतर चुके हैं। निवाड़ी के पृथ्वीपुर और अशोकनगर जिले के मुगावली में ओलावृष्टि से चौपट फसलों के नुकसान का जायजा लेने पहुंचे सीएम शिवराज ने अफसरों को सख्त हिदायत देते हुए कहा कि किसान के लिए यह संकट की घड़ी है। मैं मंच से अफसरों को सीधा कह रहा हूं कि किसान की फसल के सर्वे में कोई चूक ना हो जाए, ईमानदारी से सर्वे करना, जरूरत पड़े तो मुआवजा के लिए एक दो प्रतिशत ज्यादा लिख देना। अगर कम लिखा तो मैं नौकरी करने के लायक नहीं रहने दूंगा। मैं दुख की घड़ी में आया हूं। मैंने खुद अपनी आंखों से फसलें देखी हैं। किसान के दर्द को पहचानता हूं और तकलीफ जानता हूं। किसान ने दिन रात मेहनत करके, कर्जा लेकर खाद- बीज डाला और पानी से नहीं पसीने से अपनी फसलों को सींचा, तब अन्न के दाने हमारे घर पर आते हैं। किसान भाइयों चिंता मत करना, यह संकट आया है और संकट से पार निकाल कर हम ले जाएंगे। जल्द ही सर्वे पूरा कर लिया जाएगा और सूची को पंचायत भवन पर लगाएंगे। इसके बाद किसी का सर्वे रह गया होगा, तो फिर से कराएंगे और 25 जनवरी से मुआवजा वितरण करना शुरू कर दिया जाएगा। सीएम ने फसलों को हुए नुकसान के लिए 30 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर सहायता राशि देने का ऐलान किया है।

किसान परेशान न हो, संकट के समय सरकार उनके साथ है और उन्हें इस संकट से भी निकालेगी। प्रभावित कृषकों की बेटियों का विवाह है, तो वह भी राज्य सरकार कराएगी। किसानों को तकलीफ से बाहर निकालना उनका धर्म है, कर्तव्य है और उनकी ड्यूटी भी है। शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

संकट में साथ देने के लिए ही बना हूं मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने निवाड़ी जिले की पृथ्वीपुर तहसील के ग्राम खिस्टोन में असमय वर्षा और ओलावृष्टि से खराब हुई फसलों का मुआयना किया। प्रभावित फसलों को देखने मुख्यमंत्री खेतों में पहुंचे। उन्होंने कहा कि बाहर से फसलें हरी दिखती हैं पर खेत में अंदर जाकर देखो तो कुछ नहीं बचा है। प्रदेश में पृथ्वीपुर सहित जहां-जहां भी फसलों को नुकसान पहुंचा है, उसकी भरपाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों को शीघ्रता से राहत राशि का भुगतान कराएं।

अलग से मिलेगा बीमा का लाभ

सीएम ने कहा कि घबराना मत, मुसीबत का मिलकर मुकाबला करेंगे। आंख में आंसू मत लाना। सभी संकट से बाहर निकाल लूंगा। जहां-जहां भी ओलावृष्टि से नुकसान हुआ है उसकी भरपाई सरकार करेगी। यदि फसल का 50 प्रतिशत से अधिक नुकसान हुआ है, तो 30 हजार रूपए प्रति हेक्टेयर राहत राशि दी जाएगी। फसल बीमा का लाभ अलग से मिलेगा। साथ ही अल्पकालीन ऋण की वसूली स्थगित की जाएगी और अल्पकालीन फसल ऋण को मध्यकालीन ऋण में बदला जाएगा।

इनका भी मिलेगा मुआवजा

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनहानि के लिए 4 लाख, गाय-भैंस की मृत्यु पर 30 हजार रुपए और छोटे पशुओं बछड़ा-बछड़ी, बकरा-बकरी तथा मुर्गा-मुर्गी के लिए भी राहत राशि दी जाएगी। यदि मकानों को क्षति हुई है, खपरेल को नुकसान पहुंचा है, तो इसके लिए भी मुआवजा राशि दी जाएगी।

- » आंखों में आंसू न लाएं, ओलावृष्टि से नुकसान की भरपाई करेगी सरकार
- » सीएम ने की घोषणा: 30 हजार प्रति हेक्टेयर दी जाएगी राहत राशि
- » मध्यप्रदेश में अब अल्पकालीन ऋण की वसूली स्थगित की जाएगी
- » अल्पकालीन फसल ऋण को मध्यकालीन ऋण में बदला जाएगा
- » किसान बोला- बेटी की शादी करनी है, चौहान बोले- हम कराएंगे
- » संकट से पार निकाल कर हम ले जाएंगे।
- » सर्वे की सूची को पंचायत भवन पर लगाएंगे।
- » छोटे पशुओं बछड़ा-बछड़ी, बकरा-बकरी तथा मुर्गा-मुर्गी के लिए भी राहत राशि दी जाएगी।
- » खपरेल के नुकसान लिए भी मुआवजा राशि दी जाएगी।

वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2021: देश में 2,261 वर्ग किमी बढ़ा वन क्षेत्र

मध्यप्रदेश में देश का सबसे बड़ा वन क्षेत्र

संवाददाता, भोपाल।

भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) द्वारा तैयार इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2021 जारी की गई है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने हाल ही में यह रिपोर्ट जारी की है। वन सर्वेक्षण के निष्कर्षों को साझा करते हुए केंद्रीय मंत्री कहा कि देश का कुल वन और वृक्षों से भरा क्षेत्र 80.9 मिलियन हेक्टेयर है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 24.62 प्रतिशत है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि क्षेत्रफल के हिसाब से, मध्य प्रदेश में देश का सबसे बड़ा वन क्षेत्र है। इसके बाद अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा और महाराष्ट्र हैं। कुल भौगोलिक क्षेत्र के प्रतिशत के रूप में वन आवरण के मामले में, शीर्ष पांच राज्य मिजोरम में 84.53 प्रतिशत, अरुणाचल प्रदेश में 79.33 प्रतिशत, मेघालय में 76.00 प्रतिशत, मणिपुर में 74.34 प्रतिशत और नगालैंड में 73.90 प्रतिशत हैं। वर्ष 2019 के आकलन की तुलना में देश के कुल वन और वृक्षों से भरे क्षेत्र में 2,261 वर्ग किमी की

बढ़ोतरी दर्ज की गई है। देश का कुल वन और वृक्षों से भरा क्षेत्र 80.9 मिलियन हेक्टेयर है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.62 प्रतिशत है। 2019 के आकलन की तुलना में देश के कुल वन और वृक्षों से भरे क्षेत्र में 2,261 वर्ग किमी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इसमें से वनावरण में 1,540 वर्ग किमी और वृक्षों से भरे क्षेत्र में 721 वर्ग किमी की वृद्धि पाई गई है।

खुले जंगल में ज्यादा वृद्धि | वन आवरण में सबसे ज्यादा वृद्धि खुले जंगल में देखी गई है, उसके बाद यह बहुत घने जंगल में देखी गई है। वन क्षेत्र में वृद्धि दिखाने वाले शीर्ष तीन राज्य आंध्र प्रदेश (647 वर्ग किमी), इसके बाद तेलंगाना (632 वर्ग किमी) और ओडिशा (537 वर्ग किमी) है।

17 राज्य वन आच्छादित

17 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों का 33 प्रतिशत से अधिक भौगोलिक क्षेत्र वन आच्छादित है। इन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से पांच राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों जैसे लक्षद्वीप, मिजोरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय में 75 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र हैं, जबकि 12 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों अर्थात मणिपुर, नगालैंड, त्रिपुरा, गोवा, केरल, सिक्किम, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, दादरा एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव,असम,ओडिशा में वन क्षेत्र 33 प्रतिशत से 75 प्रतिशत के बीच है।

मैंग्रोव में तीन राज्य शीर्ष पर

देश में कुल मैंग्रोव क्षेत्र 4,992 वर्ग किमी है। 2019 के पिछले आकलन की तुलना में मैंग्रोव क्षेत्र में 17 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि पाई गई है। मैंग्रोव क्षेत्र में वृद्धि दिखाने वाले शीर्ष तीन राज्य ओडिशा (8 वर्ग किमी), इसके बाद महाराष्ट्र (4 वर्ग किमी) और कर्नाटक (3 वर्ग किमी) हैं।

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, राम नरेश वर्मा-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
राहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
बैतूल, सतीष साहू-8982777449
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पता:- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)